RAJYA SABHA

Friday, the 22nd April, 1960/the 2nd Vaisakh, 1882 (Saka)

The House met at eleven of the clock, MR. CHAIRMAN in the Chair.

MEMBER SWORN

Shri K. M. Panikkar (Nominated)

SHORT NOTICE QUESTION AND ANSWER

MR. CHAIRMAN: Mr. Nawab Singh Chauhan is not here.

SHRI A. M. THOMAS: Sir, even though the hon. Member is not here, with your kind permission I beg to lay a copy of the Statement on the Table.

MR. CHAIRMAN: Since the Member is not here, the question and answer may be taken to have been laid on the Table.

आसाम के मिजो जिले में खाद्य स्थिति

३. **श्री नवाबसिंह चौहान** : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान १५ अप्रैल, १९६० के 'टाइम्स आफ इंडिया' के दिल्ली संस्करण में प्रकाशित इस समाचार की ओर आकर्षित किया गया है कि आसाम के मीजो जिले में खाद्य स्थिति अति गंभीर हो गई है और इसके फलस्वरूप कुछ लोगों की मृत्यु हो गई है; और

(ख) यदि हां, तो इस समय वास्तविक स्थिति क्या है और वहां की स्थिति के सुधार के लिये केन्द्रीय सरकार द्वारा क्या सहायता दी जा रही है और क्या विशेष प्रयत्न किये जा रहे हैं ?

†[FOOD SITUATION IN THE DISTRICT OF MIZO, ASSAM

3. SHRI NAWAB SINGH CHAUHAN: Will the Minister of FOOD AND AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether Government's attention has been drawn to the report published in the Delhi Edition of the 'Times of India' dated the 15th April, 1960, that the food situation in the District of Mizo, Assam has become very serious and some people have died as a result thereof; and

(b) if so, what is the actual position at present and what assistance is being given and special efforts being made by the Central Government to improve the situation there?]

खाद्य तथा कृषि उपमंत्री (श्री ए० एम० थॉमस) : (क) और (ख) आसाम के मीजो पहाड़ी ज़िले की खाद्य स्थिति सम्बन्धी एक विवरण सदन के पटल पर रखा जाता है ।

विवरण

मीजो पहाड़ी जिले में जहां लुशाई बसते हैं, बांस के जंगल हैं । इन बांसों पर लगभग ५० वर्ष में एक बार फल लगते हैं और जब फूल लगते हैं यहां चूहों की अत्यधिक वृद्धि हो जाती है । बांस के फूलों का यह चक्र गत वर्ष आया था और जिस से इस ज़िले में चूहों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हो गई । चूहों को मारने के प्रयत्न करने पर भी इस ज़िले की ६०–८० प्रतिशत चावल की फ़सल नष्ट हो गई है । अक्तूबर—नवम्बर, १९६० में जब तक चावल की नई फसल नहीं काटी जाती तब तक इस ज़िले की जन-संख्या को खिलाना अनिवार्य हो गया है ।

२. इस ज़िले को चावल और धान-वायु, सड़क और नदी मार्गों द्वारा भेजे जा रहे हैं । सिलचर से ६ हवाई जहाज़ चावल उठा कर मीजो पहाड़ी ज़िले में फेंक रहे है । सड़क और नदी द्वारा भी चावल भेजने का काम चालू है । ३ अप्रैल १९६० तक मीजो पहाड़ी जिले में लगभग १,९०,००० मन चावल और धान निम्न प्रकार भेजे जा चुके हैं :

†[ ] English translation.